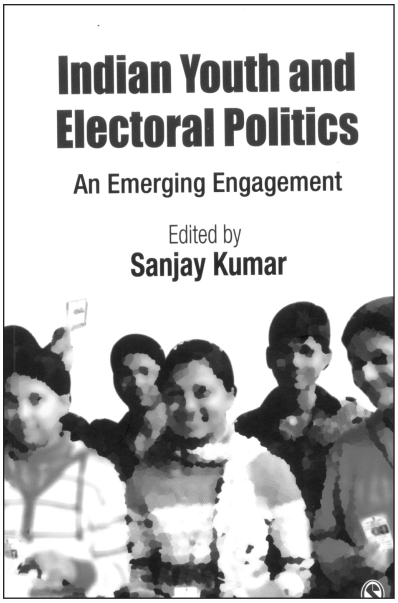

युवा-विमर्श : एक खुलती हुई श्रेणी

हिलाल अहमद

इण्डियन यूथ ऐंड इलेक्ट्रोरल पॉलिटिक्स : ऐन इमरजिंग एंगेज़मेंट
सम्पादक : संजय कुमार,
सेज पब्लिकेशन इण्डिया, नयी दिल्ली, 2014,
पृष्ठ : 186, मूल्य 450

भारतीय राजनीति में युवावस्था अपने आप में एक बेहद दिलचस्प अवधारणा के रूप में स्थापित हो चुकी है। भारत का *युवा नेता* आमतौर पर चालीस साल या उससे ज़्यादा उम्र का होता है और उसकी युवावस्था तब तक क़ायम रहती है जब तक उसका अपना कोई वंशज उसकी जगह न ले। युवा नेता अमूमन पार्टी के तयशुदा ढर्रे को ही नये विचारों और नयी ऊर्जा के नाम पर प्रसारित करते रहते हैं! हाल के वर्षों में यह दावा भी किया जाने लगा है कि राहुल गाँधी, अखिलेश यादव और चिराग पासवान भारतीय युवाओं के राजनीतिक प्रतिनिधि हैं और युवकों द्वारा इन नेताओं को भारत के भावी भविष्य के नये निर्माताओं के रूप में देख रहे हैं। दिलचस्प बात यह है कि मीडिया द्वारा प्रचलित यह युवा-विमर्श महज़ कुछ सतही मान्यताओं पर आधारित है। इस विमर्श के पीछे न तो कोई सटीक प्रमाण मौजूद है और न ही कोई व्यवस्थित विश्लेषण। इसी तरह की कुछ प्रचलित मान्यताओं और सवालों का जवाब संजय कुमार द्वारा सम्पादित यह पुस्तक देने की कोशिश करती है।

यह किताब भारतीय युवा को एक बंद श्रेणी के रूप में न देख कर क्षेत्र, सामाजिक पहचान, धर्म, जाति और लिंग के आधार पर बाँट कर अध्ययन करने का आह्वान करती है। युवाओं के विशिष्ट सरोकारों का विश्लेषण करने के लिए पुस्तक सर्वेक्षण पद्धति का सहारा लेती है और युवा-विविधता के ज़रिये राजनीतिक बहुलता को रेखांकित करने का प्रयास करती है। भूमिका और सर्वेक्षण तालिकाओं के अलावा पुस्तक छह अध्यायों में विभाजित है। ये सभी अध्याय सर्वेक्षण में पूछे गये मुख्य सवालों का व्यवस्थित विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। यह छह बिंदु हैं : राजनीतिक मुद्दों की युवा-समझ (विभा अत्री द्वारा लिखित अध्याय), राजनीति में युवाओं की रुचि और उनकी राजनीतिक भागीदारी का

28_hilal_ahmad_Layout 1 5/1/2014 5:20 PM Page 376

युवा नेता अमूनन पार्टी के तयशुदा ढर्रे को ही नये विचारों और नयी ऊर्जा के नाम पर प्रसारित करते रहते हैं! हाल के वर्षों में यह दावा भी किया जाने लगा है कि राहुल गाँधी, अखिलेश यादव और चिराग पासवान भारतीय युवाओं के राजनीतिक प्रतिनिधि हैं और युवकों द्वारा इन नेताओं को भारत के भावी भविष्य के नये निर्माताओं के रूप में देख रहे हैं। दिलचस्प बात यह है कि मीडिया द्वारा प्रचलित यह युवा-विमर्श महज़ कुछ सतही मान्यताओं पर आधारित है।

सवाल (किंजल सम्पत और ज्योति मिश्रा का लेख), चुनाव में युवा मत और रुझान (संजय कुमार का लेख), युवा उम्मीदवार और युवा मतदाताओं के अंतर्संबंध (ज्योति मिश्रा द्वारा लिखित अध्याय), राजनीतिक सुधारों का प्रश्न और युवा (श्रेयस सरदेसाई का लेख) और युवाओं द्वारा राजनीति को करियर बनाने का सवाल (संजय कुमार का लेख)। अपनी भूमिका में अपनी सर्वेक्षण पद्धति स्पष्ट करते हुए संजय कुमार बताते हैं कि युवा शब्द का अर्थ इस शोध प्रोजेक्ट में कैसे लिया गया है। वे लिखते हैं : 'युवा श्रेणी को परिभाषित करना एक अत्यंत जटिल काम है। लेकिन इसके बावजूद हम युवाओं के राजनीति पर होने वाले प्रभावों को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। भारत की औसत आयु का मध्यमान 25 वर्ष है जो हमें चीन से 10 वर्ष और संयुक्त राज्य अमेरिका से 15 वर्ष युवा बनाता है। ... इस अध्ययन में युवा को जनसांख्कीय श्रेणी के रूप में लिया गया है ताकि युवाओं को उनके सामाजिक आर्थिक परिवेश के अंतर्संबंध के साथ विश्लेषित किया जा सके। ... सर्वे और अध्ययन की सुविधा के लिए हमने 18 से 33 वर्ष के बीच आने वाले लोगों को अपना प्रतिभागी बनाया है?' (पृष्ठ XII- XIV)।

पुस्तक विश्लेषण और पद्धति के अंतर्संबंधों पर विशेष बल देती है। यही कारण है कि शोध करने का तरीक़ा, शोध में इस्तेमाल की गयी प्रश्नावली और विश्लेषण के लिए बनाई गयी तालिकाओं को विशिष्ट रूप से दर्शाया गया है ताकि पाठक के सामने शोध के परिणाम और शोध की प्रक्रिया स्पष्ट की जा सके। संजय कुमार बताते हैं, 'इस अध्ययन में शोध के तीन तरीक़े इस्तेमाल किये गये हैं : युवाओं और वे समूह जिन्हें पारिभाषित तौर पर युवा नहीं माना गया, उनका क्रॉस-सेक्शन सर्वे, जिन निर्वाचन क्षेत्रों में सर्वे किया गया वहाँ मौजूद प्रतिभागियों के साथ समूह-चर्चा एवं पंद्रहवीं लोकसभा में चुने गये युवा सांसदों के साथ साक्षात्कार ... सर्वे का आधार उन लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों को बनाया गया जहाँ से या तो कोई युवा नेता (25 वर्ष से 40 वर्ष के बीच) चुनाव जीता था या फिर मत-प्रतिशत के आधार पर द्वितीय रहा था। ऐसी 140 लोकसभा सीटों में से 14 लोकसभा सीटें चुनी गयीं। प्रत्येक लोकसभा सीट को दो विधानसभा सीटों में बाँटा गया और इन विधानसभा सीटों में आने वाले चार मत केंद्रों के आधार पर प्रतिभागियों की पहचान की गयी। ... इस तरह 3700 युवा मतदाता सर्वे के लिए चुने गये और सर्वे के दौरान 2352 मतदाताओं के साथ साक्षात्कार किया गया। ... इस सर्वे में 26 प्रतिशत प्रतिभागियों से शहरी क्षेत्रों में और 74 प्रतिशत प्रतिभागियों से ग्रामीण क्षेत्रों में बात की गयी। इन प्रतिभागियों में 56 प्रतिशत पुरुष और 44 प्रतिशत महिलाएँ थीं। इसी तरह से 24 प्रतिशत युवा दलित, पाँच प्रतिशत आदिवासी और आठ प्रतिशत मुसलमान थे।' (पृ. xxviii-xxix)।

पुस्तक कई रोचक तथ्यों को उजागर करती हैं। विभा अत्री बताती हैं कि भारत के युवा अन्य आयु वर्ग के लोगों की तुलना में राजनीतिक रूप से ज़्यादा सजग हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं लगाना चाहिए की युवा की श्रेणी में तमाम लोग एक तरह से सोचते हैं और उनकी राजनीतिक सजगता में कोई विरोधाभास नहीं है। उनके अनुसार इस संबंध में शिक्षा और मीडिया महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते

28_hilal_ahmad_Layout 1 5/1/2014 5:20 PM Page 377

हैं (पृष्ठ 15)। राजनीतिक सजगता और राजनीतिक भागीदारी के अंतर्संबंधों पर प्रकाश डालते हुए किंजल सम्पत और ज्योति मिश्रा तर्क देती हैं कि युवाओं की राजनीति में रुचि तो बढ़ी है लेकिन मत प्रतिशत के आधार पर युवा मतदाताओं में वोट डालने की लोकप्रियता सीमित है। लेकिन इस का अर्थ यह नहीं है कि युवा राजनीतिक रूप से निष्क्रिय हैं। वे बताती हैं कि चुनावी राजनीति के बाहर चल रहे विभिन्न आंदोलनों में युवाओं की भागीदारी बढ़ी है। (पृष्ठ 45 से 47) संजय कुमार का लेख इस तथ्य पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है कि आख़िर भारत के युवा किस राजनीतिक दल को अपना समर्थन देने में विश्वास करते हैं। संजय कुमार के अनुसार पिछले कुछ वर्षों के चुनाव ये दिखाते हैं कि नब्बे के दशक में भाजपा की ओर आकर्षित होने वाला युवा पिछले दशक में भाजपा से विमुख होता सा दिखता है। रोचक बात यह है कि युवा माहिलाओं में कांग्रेस और युवा पुरुषों में भाजपा ज़्यादा लोकप्रिय है। इसके बरअक्स युवा दलित मतदाता बहुजन समाज पार्टी की ओर आकृष्ट हुए हैं जबकि अन्य पिछड़े वर्गों के युवा मतदाता कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी के बीच बँटे हुए हैं। इस आधार पर यह तर्क दिया जा सकता है कि भारतीय युवा दलगत राजनीति में उसी तरह बँटा हुआ है जिस तरह समाज के अन्य आयु वर्ग के लोग विभाजित हैं (पृष्ठ 60–61)।

क्या युवा नेता वास्तव में युवा नेताओं को आकर्षित करते हैं? इस सवाल का जवाब देते हुए ज्योति मिश्रा बताती हैं कि यह प्रश्न इतना सीधा नहीं जितना कि मीडिया द्वारा बताया जाता है। वे कहती हैं कि युवा नेता हर आयु वर्ग के लोगों में ज़्यादा लोकप्रिय हैं। लेकिन युवा नेताओं को राजनीतिक पसंद बताने वाले लोगों की संख्या शहरों में ज़्यादा है। हालाँकि यह भी सच है कि युवा प्रतिभागी युवा नेतृत्व को ज़्यादा समर्थन करते पाए जाते हैं (पृष्ठ 73–75)। श्रेयस सरदेसाई का लेख इस चर्चा को आगे बढ़ाता है। वे बताते हैं कि चुनाव- सुधारों के प्रति युवाओं में बेहद उत्साह है और यही एक ऐसा मुद्दा है जिस पर भारत के युवा एक मत हैं। पुस्तक के अंतिम अध्याय में राजनीति को करियर बनाने से संबंधित आँकड़ों का आकलन करते हुए संजय कुमार बताते हैं कि युवाओं की एक बड़ी संख्या राजनीति में जाना चाहती है, हालाँकि 54 प्रतिशत युवा राजनीति को अपना करियर नहीं बनाना चाहते। राजनीति के प्रति इस मिले-जुले रवैये के कई कारण उभर कर सामने आते हैं। उदाहरण के लिए 10 प्रतिशत प्रतिभागियों ने यह कहा कि वे राजनीति में रुचि तो रखते हैं लेकिन राजनीति को करियर बनाने के प्रति वे निश्चित नहीं हैं। युवतियों के तर्क भी विचारणीय हैं। 56 प्रतिशत ग्रामीण युवतियों और 67 प्रतिशत शहरी युवतियों का मत है कि राजनीति महिलाओं का कार्यक्षेत्र है।

> युवा अन्य आयु वर्ग के लोगों की तुलना में राजनीतिक रूप से ज़्यादा सजग हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं लगाना चाहिए कि युवा की श्रेणी में तमाम लोग एक तरह से सोचते हैं और उनकी राजनीतिक सजगता में कोई विरोधाभास नहीं है। ... युवाओं की राजनीति में रुचि तो बढ़ी है लेकिन मत प्रतिशत के आधार पर युवा मतदाताओं में वोट डालने की लोकप्रियता सीमित है। लेकिन इस का अर्थ यह नहीं है कि युवा राजनीतिक रूप से निष्क्रिय हैं।

पुस्तक बुनियादी तौर पर युवा राजनीति पर एक शुरुआती काम कहा जा सकता है; लेकिन जिस अवधारणात्मक स्पष्टता के साथ लोकप्रिय मान्यताओं को समझा-समझाया गया है, वह प्रशंसनीय है। शोधार्थियों, आम पाठकों और उन लोगों के लिए, जो अभी तक राहुल गाँधी के नारे 'राजनीति नहीं काजनीति' के अर्थ निकालने की कोशिश कर रहे हैं उनके लिए यह पुस्तक बेहद उपयोगी है।